ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

SHREE SANTINATH DIGEMBER JAIN MANDIR ATISHYA KSHETRA KOTANA

AMIT KUMAR शोध छात्र इतिहास विभाग एम0 एम0 पी0 जी0 कॉलिज, मोदीनगर, (गाजियाबाद)

ABSTRACT

भारत वर्ष में विभिन्न धर्मों के लोगों द्वारा मन्दिर निर्माण का अपना इतिहास रहा है तथा इन सभी मन्दिरों में जैन मन्दिर परंपरा की अपनी अलग विशेषताएँ हैं जो भारतीय कला एवम् वीतरागता को प्रदर्शित करती है। इस शोध पत्र में जनपद बागपत (उत्तर प्रदेश) के एक गाँव कोताना के जैन मन्दिर को लिया गया है, ताकि उस काल विशेष में इस क्षेत्र में जैन मन्दिर की विशेषताओं को जाना जा सके। इस शोध पत्र में कोताना के मन्दिर की विशेषताओं को लिपिबद्ध करने की कौशिश की गयी है जैसे – मन्दिर का इतिहास, मन्दिर की संरचना एवम् कला (मण्डप व गर्भगृह का आकार, उनके स्तम्भ, छत व उन पर की गयी चित्रकारी, वेदी तथा प्रतिमाओं की विशेषताएँ, शिखर की विशेषताएँ आदि)।

कोताना जनपद बागपत उत्तर प्रदेश की तहसील एवम् विकास खण्ड बडौत के अंतर्गत अक्षांश 29.1155141 तथा देशांतर 77.1762083 पर स्थित एक बड़ा गाँव है।[1] इसका कुल क्षेत्रफल 1168.11 हेक्टेयर तथा जनसंख्या 11734 है।[2] यह गाँव जनपद मुख्यालय से 22 किलोमीटर उत्तर दिशा में तथा कस्बा बडौत से 11 किलोमीटर पश्चिम दिशा में यमुना नदी के बाएँ किनारे पर स्थित है। यहां दिल्ली से सहारनपुर वाया शामली जाने वाली रेलगाड़ी से बड़ौत रेलवे स्टेशन से पहुँच सकते हैं जो इस गाँव से 12 किलोमीटर दूर स्थित है। चूंकि कस्बा बड़ौत राष्ट्रीय राजमार्ग 709 बी पर स्थित है अतः दिल्ली से बस या अपने वाहन द्वारा भी यहां पहुँचा जा सकता है। कोताने का अपना लंबा इतिहास है ईसवीं सन् 1319 में मुबारक शाह खिलजी के सेनापति जाफर अली की कामांध्ता के कारण सर्वखाप पंचायत के वीरों व जाफर अली के मध्य युद्ध का विवरण प्राप्त होता है जिसके अनुसार कोताने की एक युवती ने जाफर अली का सर कलम कर दिया था।[3] सल्तनत काल से ही यह एक व्यापारिक केंद्र था जिसको उत्तर मुगल काल में सरधना (मेरठ) की बेगम समरू के समय ख्याति प्राप्त हुयी।

वैसे तो यहाँ मुस्लिम जनसंख्या अधिक है लेकिन लंबे समय तक व्यापारिक केंद्र होने के कारण यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग निवास करते आये हैं परिणामस्वरुप यहाँ अनेको धर्म स्थल बने हैं जैसे मन्दिर व मस्जिद आदि। इन्हीं धर्म स्थलों में से एक दिगम्बर जैन मन्दिर भी यहाँ स्थित है जो जैन धर्म के 16 वें तीर्थकर श्री शांतिनाथ जी[4] को समर्पित है।

मंदिर का इतिहास

कस्बा वासियों की मान्यतानुसार यहां का जैन मंदिर कई सौ वर्श प्राचीन है लेकिन मंदिर से ऐसा कोई प्रत्यक्ष साक्ष्य प्राप्त नहीं होता जो मंदिर की वास्तविक स्थापना तिथि व उसका निर्माण कराने वालों के विशय में जानकारी दे सके। लेकिन मंदिर में स्थापित प्रतिमाओं की प्रशस्तियों से कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। अधिकतर प्रतिमाऐं 1868 से 1900 ई0 के बीच की हैं। मूलनायक[5] प्रतिमा सन् 1868 की हैं[6] जो इस मंदिर को 150 वर्श के लगभग प्राचीन बनाती है। इस मंदिर में एक प्राचीन वेदी है जो मंदिर के एक कोने में छोटे से जर्जर कमरे में बनी है जो इस मान्यता को बल देती है कि यह मंदिर पहले एक चैत्यालय था। बाद में इसे शिखर बंद मंदिर बनाया गया। यह एक पंचायती मंदिर है जिसके संचालन के लिए एक समीति बनी है। वर्तमान में इस समीति के प्रधान श्री अर्जुन जैन हैं। मंदिर के रखरखाव व पूजा प्रक्षाल के लिए एक पुजारी भी हैं जिनका नाम श्री प्रमोद जैन है।[7]

यहां का मंदिर अतिशय[8] क्षेत्रों की श्रेणी में आता हैं जहां वर्श भर दर्शानाभिलाशी आते रहते है। प्रत्येक वर्श भादो पक्ष में श्री शान्तिनाथ जी की रथ यात्रा निकाली जाती है जिसमें गांव के सभी लोग बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते है। सामाजिक सौहार्द अगर को देखना है तो इस रथ यात्रा को देखना जरूरी है।[9]

मंदिर की संरचना एवम् कला

यह एक आयताकार संरचना है जिसका प्रवेश द्वार दक्षिण दिशा में बना है । यह सम्पूर्ण संरचना एक ऊँचे अधिश्ठान पर बनायी गयी हैं । सड़क से 6 सीढ़िया उत्तर दिशा में चढ़ने पर बड़ा हॉल है जिसके ऊपर प्रथम तल पर भी एक हॉल बनाया गया है। भूतल के हॉल से पश्चिम दिशा में 7 सीढ़िया ऊपर चढ़ने पर मूल मंदिर में प्रवेश होता है जो एक वर्गाकार संरचना है। प्रवेश के उपरांत एक बरामदा उसके सामने मण्डप व मण्डप के दक्षिण दिशा में लगभग 4 फीट की ऊँचाई पर मूल गर्भगृह स्थापित है।

मण्डप

यह वर्गाकार संरचना है जिसका क्षेत्रफल 19 वर्ग फीट है। इसके दायीं व बांयी दोनो ओर बरामदे हैं। इसकी छत सपाट व बरामदों की छत से लगभग दोगुनी ऊंचाई पर है। बरामदो व मण्डप के बीच में बलुए प्रस्तर को तराश्कर बनाए गए स्तम्भ लगे हैं जिनका भीतरी हिस्सा सपाट है तथा मण्डप व बरामदों में पड़ने वाले हिस्से पर नीचे व ऊपर कमलाकृति बनी हैं। सभी स्तम्भों को मेहराबदार संरचना से जोड़ा गया है। गर्भगृह वाली दीवार को छोड़कर बाकी तीन दीवारों में बरामदो की छत से ऊपर बड़ी खिडकियां लगी हैं। मण्डप के दक्षिणी दिशा में मूल गर्भगृह है जो मण्डप से लगभग 4 फीट ऊंचाई पर बना है। इसमें प्रवेश के लिए मण्डप से तीन द्वार बने हैं तथा बराबर वाले बरामदों से भी इसमें प्रवेश हो सकता हैं

गर्भगृह वाली दीवार में तीनों दरवाजों के बीच में प्रतिकात्मक स्तम्भ बने हैं तथा दरवाजों के ऊपर मेहराब। इसी दीवार के ऊपरी हिस्से में प्रतिकात्मक उभरी हुयी अवस्था में तीन शिखर आकृतियां बनी है।

गर्भगृह

यह वर्गाकार संरचना है जिसका क्षेत्रफल 18.6 वर्ग फीट है तथा इसके दोनो ओर बरामदे बने हैं। बरामदो व गर्भगृह के बीच में प्रस्तर के 2 फीट चौड़ाई के 8 स्तम्भ हैं। जिनको जौडे में बनाया गया है। स्तम्भों पर नीचे और ऊपर कमलाकृतियां बनी हैं तथा इन स्तम्भों के बीच में मेहराब बने है जिन पर फूल व पत्तियों की आकृतियों को उकेरा गया है। (चित्र संख्या–1)

(चित्र संख्या–1) गर्भगृह के स्तम्भ

इसकी छत गुम्बदाकार व अश्टाकोणीय है।(चित्र संख्या–2) गर्भगृह की दीवारों व छत के मध्य 8 प्रतिकात्मक महेराबदार खिड़कीनुमा आकृतियां बनी है जिनकी कोणों वाली संरचनाओं को शिखर में अंदर की ओर गहरा किया गया है तथा बीच वाली संरचनाओं में चारो दिशाओं में गवाक्ष (खिड़कियां)[10] बने हैं। छत व उससे नीचे की संरचना पर बड़ी सुंदर चित्रकारी की गयी है जिसमें सुनहरे रंगों का बहुतायत में प्रयोग किया गया है। चित्रकारी प्राचीन है जो अब कुछ जगह से फीकी पड़ने लगी है।

चित्र संख्या–2) गर्भगृह की छत व उससे नीचे की संरचना

वेदी तथा प्रतिमाऐं

गर्भगृह व इसके बरामदो में कुल तीन वेदियां हैं। मुख्य वेदी 100 इंच चौड़ी व 82 इंच ऊंची है जिसे श्वेत पाशाण को तराश्कर बनाया गया हैं। यह वेदी 121 वर्श प्राचीन है जिसका निर्माण संवत् 1954 अर्थात् 1897 में कोताना निवासी लाला सौसिंह राय व लाला निहाल सिंह जी ने कराया था।[11] इस वेदी के आधार पर प्रस्तर को तराश्कर जालियों की आकृति, फूल पत्तियों व हाथियों की आकृति बनायी गयी है। वेदी के ऊपर गुम्बादाकर शिखराकृति एवं उसके ऊपर तीन छोटे–छोटे कलश स्थापित है। वेदी के ऊपरी हिस्से में दोनो कोणों पर चँवर धारी पुरूशों को भी दर्शाया गया है।

मूल वेदी में मूलनायक श्री शान्तिनाथ की प्रतिमा सहित कुल 19 प्रतिमाऐं हैं। मूलनायक प्रतिमा काले पाशाण को तरास्कर बनायी गयी है। यह 21 इंच ऊंची संवत् 1925 की प्रतिमा है[12] जो पद्मासन मुद्रा में बनायी गयी है प्रतिमा के नेत्र खुले, भौहें चढ़ी हुयी, होठो पर मुस्कान, कान लम्बे कन्धों को स्पर्श करते हुए, चौड़े कन्धे, कमर पतली, वक्ष स्थल पर श्रीवत्स का चिन्ह तथा नीचे इसकी चौकी के मध्य लांछन हिरन[13] को दर्शाया गया है। (चित्र संख्या–3)

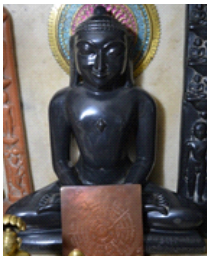

(चित्र संख्या–3) मूलनायक प्रतिमा श्री शान्तिनाथ संवत् 1925

अन्य प्रतिमाओं[14] में संवत् 1957 की 21 इंच की आदिनाथ की प्रतिमा, पार्श्वनाथ की गेरूए रंग के पाशाण की 24 इंच की संवत् 1955 की प्रतिमा, (यह खडगासन मुद्रा में बनायी गयी है। जिसके सर पर 9 सर्प फनो को दर्शया गया है। नीचे दो चँवर धारी पुरूश व उसके ऊपर दोनो ओर एक के ऊपर दूसरा खडगासन तीर्थंकरों का दर्शाया है), एक अन्य काले पाशाण की पार्श्वनाथ की संवत् 1990 की 26 इंच ऊंची चौबीसी, श्री अजितनाथ की संवत् 1957 की 21 इंच की प्रतिमा, गेरूए रंग के पाशाण की संवत् 2485 की 13 इंच की पार्श्वनाथ की प्रतिमा, शान्तिनाथ की 11 इंच की प्रतिमा, महावीर स्वामी की 11 इंच की वीर संवत् 2468 की प्रतिमा, चंद्रप्रभु की 11 इंच की संवत् 1558 की प्रतिमा, एक छोटी गहरे भूरे रंग के पाशाण की घिसी हुयी 3 इंच की प्रतिमा स्थापित है। इसके अतिरिक्त एक 12वी शताब्दी का पाशाण फलक भी है (चित्र संख्या–4) जो किसी मंदिर के स्तम्भ आदि का टूटा हुआ हिस्सा प्रतीत होता है। इसमें तीर्थकरों को खड़गासन मुद्रा में उकेरा गया है। यह फलक कोताना के प्राचीन शिव मंदिर के पास खुदाई में प्राप्त हुआ था।[15]

धातु की प्रतिमाओं में संवत् 1923 की 9 इंच की पार्श्वनाथ की प्रतिमा, 6 इंच की नेमिनाथ की प्रतिमा, संवत् 1935 की 5 इंच की शान्तिनाथ की प्रतिमा , 3 इंच की छोटी प्रतिमा, संवत् 1957 की 9 इंच की चंद्रप्रभु की प्रतिमा व संवत् 1957 की 7 इंच की अजिनाथ की प्रतिमा स्थापित है।

दायीं वाली वेदी में वीर संवत 2149 की 15 इंच की श्री शान्तिनाथ की प्राचीन प्रतिमा है तथा बायीं वाली वेदी में काले पाशाण की संभवनाथ की संवत् 1957 की 15 इंच की प्रतिमा विराजमान है। तीर्थकर पार्श्वनाथ की एक खण्डित प्रतिमा मंदिर की पुरानी वेदी में स्थापित है।

शिखर

कोताने के जैन मंदिर का शिखर बेहद खूबसूरत व दर्शनीय है (चित्र संख्या–5) जिसके निर्माण में चूने व छोटी इंटों का प्रयोग किया गया है। भूतल से ऊपर कलश तक इसकी ऊंचाई 108 फीट है। यदि ग्रीवा व कलश सहित ऊंचाई की बात की जाए तो यह लगभग 70 फीट ऊंचाई रखता है। इसकी ग्रीवा काफी ऊंची है जिसमें बलुए पत्थर का प्रयोग किया गया है। इसके निचले हिस्से में बीच में खिड़की गवाक्ष बनी है तथा उसके ऊपर पत्थर को तराशकर शिखर आकृति बनायी गयी है। पत्थर को इस प्रकार से लगाया गया है कि स्तम्भ आकृतियों का आभास होता है। इसकी छाद्य भी काफी बड़ी व डिजाइनदार है। ग्रीवा के बीच वाले हिस्से के ऊपर छाद्य शिखर की ओर गोलाई में घूमी हुयी हैं तथा जहां यह गोलाई में घूमी है उसके एकदम नीचे एक खिड़की बनी है व इसके ऊपर एक ओर जालीदार खिड़की।

छाद्य से कलश तक शिखर बीच में से कम गोलाई लिए है तथा चारों ओर अरू श्रृंग व उसके ऊपर कलश तक उभरी हुयी संरचना बनायी गयी है। सम्पूर्ण शिखर पर 108 छोटी शिखर आकृतियां भी बनी है जो छाद्य पर एक पंक्ति में चारो ओर फिर उसके ऊपर उनसे छोटी आकृति तथा अरू श्रृंग से चोटी तक उभरी संरचना के दोनो ओर चारो दिशाओ में। ऊपर की शिखर आकृति अपने से नीचे की शिखर आकृति से छोटी होती जाती है। शिखर की चौटी पर सम्पूर्ण आमलक चंद्रिका सहित तथा उसके ऊपर पीतल का कलश स्थापित किया गया है। शिखर पर ध्वज का आभाव है जो कुछ समय पहले खंडित हो गया था।[16]

(चित्र संख्या–5) मंदिर का शिखर

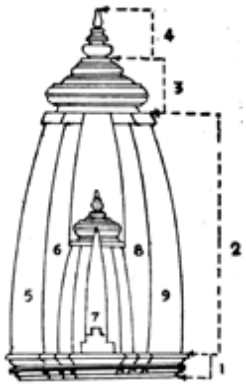

(चित्र संख्या–6) मंदिर का शिखर, 1 छाद्य, 2 शिखर, 3 आमलसार, 4 कलश, 5 और 9 कर्ण–रेखा, 6 और 8 प्रति–कर्ण उपरथ, 7 उरू–श्रृंग।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1- Wikiedit.org/India/Kotana/44671
2- Villageinfo.in/uttar-pradesh/baghpat/baraut/Kotana.html
3. डॉ0 ओमपाल सिंह तुगानिया – जाट समाज की प्रमुख व्यवस्थाऐं, जयपाल ऐजेन्सीज आगरा, 2004, पृ0 23
4. जैन धर्म की परम्परा के अनुसार जैन धर्म में 24 तीर्थकर हुए है। डॉ0 आनन्द सिंह – प्राचीन भारतीय धर्म उद्भव एवं स्वरूप, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2010, पृ0 58–59
5. मंदिर की मुख्य प्रतिमा अर्थात् जिस तीर्थंकर का मंदिर है उसकी प्रतिमा।
6. मूलनायक श्री शान्तिनाथ की प्रतिमा की प्रशस्ति से प्राप्त विक्रम संवत् 1925 के अनुसार।
7. साक्षात्कार – श्री रविन्द्र कुमार जैन, उम्र 63 वर्श, निवासी कौताना, दिनांक 09/07/2017
8. जहां किसी मंदिर में या मूर्ति में कोई चमत्कार दिखाई दे, तो वह अतिशय क्षेत्र कहलाता है। बलभद्र जैन– भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, प्रथम भाग, प्रकाशक भारत वर्शीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, बम्बई, 1974, पृ0–11
9. साक्षात्कार– श्री प्रमोद जैन, पुजारी, उम्र–40 वर्श, दिनांक 09/07/2017
10. गवाक्ष को वास्तु शास्त्र में खिड़की कहा गया है। मंदिर में वास करने वाला देवता इन खिड़कियों से बाहर देखता है, इनके द्वारा देवता सम्पूर्ण प्रसाद पर अपनी दीप्ति छाये रखता है। मिनाक्षी कासलीवाल भारती – भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्थपत्य कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2009, पृ0–179
11. मंदिर की मुख्य वेदी से प्राप्त प्रशस्ति के अनुसार।
12. प्रतिमा की प्रशस्ति से प्राप्त संवत् 1925 के अनुसार।
13. सभी तीर्थकरों के प्रथक – प्रथक लांछन हैं जिनमें श्री शान्तिनाथ जी का लाछंन हिरन है। डॉ0 आनन्द सिंह – वहीं पृ0 58–59
14. सभी प्रतिमाओं की पहचान उनके लांछनो से की गयी है तथा प्रशस्तियों से उनके निर्माण की तिथि को जाना गया हैं।
15. साक्षात्कार श्री रविन्द्र कुमार जैन, वही, दिनांक :09/07/2017।
16. शिखर के विभिन्न भागो को समझने के लिए नीचे दिए गए मानचित्र (चित्र संख्या–6) का सहारा लिया जा सकता है। अमलानन्द घोश–जैन कला एवं स्थापत्य, खण्ड–3, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1975, पृ0 523।